

# बहारे तहरीर

दूसरा हिस्सा



# ABOUT US

---

Abde Mustafa Official, a team from Ahle Sunnat Wa Jama'at  
Our motto : Serving Quraano Sunnat, preaching Ilme Deen and  
to reform people.

This team came into existence in the year 2012 and in very  
few years this team did a lot of acts.

There is also a special place of Abde Mustafa Official on  
social media networking sites.

Lots of people from all over the world are connected to us  
via Facebook, WhatsApp, Instagram, Telegram, YouTube and  
Blogger.

Abde Mustafa Official



## ABDE MUSTAFA OFFICIAL

[abdemustafaofficial.blogspot.com](http://abdemustafaofficial.blogspot.com)

## क्या हुज़ूर गौसे पाक और सरकार गरीब नवाज़ की मुलाकात हुई?

चन्द गैर मुअतबर किताबों में इस तरह के वाक्यात दर्ज है जिनसे ज़ाहिर होता है कि हुज़ूर गौसे पाक और सरकार गरीब नवाज़ अलैहिमुर्रहमा की मुलाकात हुई है लेकिन हकीकत ये है कि दोनो बुजुर्गों की मुलाकात साबित नहीं

इसकी तफ्सील बयान करते हुए शारहे बुखारी, हज़रत अल्लामा मुफ्ती शरीफुल हक़ अमजदी अलैहिमुर्रहमा लिखते हैं :-

इस पर सारे मुअर्रिखीन का इत्तिफाक़ है कि सरकार गौसे पाक रदिअल्लाहु त्आला अन्हु का विसाल 561 हिजरी में हुआ, इस पर भी करीब करीब इत्तिफाक़ है कि हज़रते गरीब नवाज़ रदिअल्लाहु त्आला अन्हु ने 15 साल की उम्र से इल्मे ज़ाहिरी के हुसूल के लिये सफ़र किया।

एक मुद्दत तक आप समरक़न्दो बुखारा में इल्म हासिल करते रहे।

उलूम -ए- ज़ाहिरी की तक्मील के बाद मुर्शिद की तलाश में निकले फिर 20 साल तक मुर्शिद की खिदमत में हाज़िर रहे।

20 साल के बाद खिलाफ़त से सरफराज़ फरमाये गये फिर मदीना -ए- मुनव्वरा में हाज़िर हुए और सरकार-ए-आज़म ﷺ ने हिन्दुस्तान की विलायत अता फरमायी।

अब हिसाब लगायें कि 15 साल की उम्र तक हज़रते गरीब नवाज़ अपने वतन में रहे और 20 साल तक इल्म-ए- ज़ाहिर तलब फरमाते रहे तो ये (20+15) 35 साल हो गये 537 हिजरी में विलादत हुई, 35 साल तक इल्मे ज़ाहिर की तलब में रहे (537+35) यानी 572 हिजरी में आपने ईराक़ का रुख किया जबकि हुज़ूर गौसे आज़म रदिअल्लाहु त्आला अन्हु का विसाल 561 हिजरी में हो चुका था यानी हज़रते गरीब नवाज़ ने जब ईराक़ का रुख किया उससे 11 साल पहले हुज़ूर गौसे आज़म रदिअल्लाहु त्आला अन्हु का विसाल हो चुका था, फिर मुलाकात कैसे हुई?

(ملخصاً وملتقطاً: فتاوى شارح بخارى، ج2، ص128 تا 131، ط دائرة البركات گھوسی، س1433ھ)

मज़कूरा तफ्सील से ये बात बिल्कुल वाज़ेह हो जाती है कि सरकार गौसे आज़म और सरकार गरीब नवाज अजमेरी अलैहिमुर्रहमा की मुलाक़ात साबित नहीं।

अब्दे मुस्तफ़ा

## इल्म को लिख कर कैद कीजिए

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक रदिल्लाह त'आला अन्हु फरमाते हैं के इल्म को लिख कर कैद कर लो।

(नوادर الاصول، 1/265)

जब भी कोई ऐसी बात मालूम हो जिसे आप अपनी याददाश्त में महफूज़ करना चाहते हैं तो चाहिए के उसे लिख ले। हमारे बुजुर्गों का भी यही तरीका था के अहम बातों को लिख लिया करते थे।

हज़रते सय्यिदुना खलील बिन अहमद अलैहिमुर्रहमा फरमाते हैं के मैंने जो कुछ सुना लिख लिया, जो कुछ लिखा वो याद कर लिया, जो कुछ याद किया उससे फायदा उठाया है।

(جامع بيان العلم وفضله، ص 108)

अब्दे मुस्तफ़ा

AM ABDE MUSTAFA

## इमाम रबी बिन नाफे हलबी और हज़रत अमीर -ए- मुआविया

इमाम रबी बिन नाफे हलबी (मुतवफ़फा 241 हिजरी) फरमाते हैं कि हज़रत अमीर -ए- मुआविया रदीअल्लाहु त'आला अन्हु रसूले करीम ﷺ के सहाबा का पर्दा है, जब कोई शख्स पर्दा उठाता है तो जो कुछ उसके पीछे है उस पर भी जुरत करता है यानी जो हज़रत अमीर मुआविया रदिल्लाहु त'आला अन्हु पर तान करता है एक वक़्त ऐसा आता है कि वो दीगर सहाबा पर भी जुबान दराज़ करता है।

-البدایة والنهایة، ج 8، ص 148

-تاریخ بغداد، ج 1، ص 577



## نबी کے دشمن کو لالکار

جنگ -ع- ۱۱ھ میں جب کافروں کے طرف سے ۱۱۱ھ سبائے میدان نے آیا تو ہجرت سے ۱۱۱ھ  
امیر -ع- ۱۱۱ھ رذی اللہ تعالیٰ عنہ نے اس کو یہ کہہ کر لالکارا :-

یا ابن مقطعة البظور اتحاد الله ورسوله ثم شد عليه فكان كامس الذاهب

ترجمہ : (ہجرت سے ۱۱۱ھ -ع- ۱۱۱ھ رذی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا کہ) "او اورتو  
کے ختنے کرنے والی کے لڑکے! تو اللہ تعالیٰ اور اس کے رسول سے دشمنی کرتا  
ہے؟"

یہ کہہ کر آپ نے اس پر سخت حملہ کر دیا اور اس کو واسیل -ع- ۱۱۱ھ کر  
دیا

(۱) صحیح بخاری، کتاب المغازی، باب قتل حمزہ

(۲) مسند احمد بن حنبل، ج ۳، ص ۵۰۱

(۳) صحیح ابن حبان، ج ۶، ص ۳۰۰

(۴) دلائل النبوة للبیہقی، ج ۳، ص ۲۴۲

(۵) صفۃ الصفوة، ج ۱، ص ۳۷۳

(۶) المنتظم، باب غزوہ احد

(۷) جامع الاصول، ج ۸، ص ۲۴۸

(۸) عمدۃ القاری، ج ۱۷، ص ۲۱۱

(۹) ذخائر العقبی، ج ۱، ص ۱۷۷

(۱۰) البدایہ والنہایہ، ج ۴، ص ۱۹

- (11) السيرة النبوية لابن كثير، ج 3، ص 38
- (12) تاريخ الاسلام للذهي، ج 1، ص 208
- (13) سير اعلام النبلاء، ج 1، ص 178
- (14) جامع الاحاديث للسيوطي، ج 41303
- (15) سبل الهدى والرشاد، باب غزوة احد
- (ملخصاً: لمعات مصطفى صلى الله عليه وسلم، ص 123، 124)

अब्दे मुस्तफा

## मुसलमान कौन?

डरो खुदा से होश करो कुछ मकरो रिया से काम ना लो,  
या इस्लाम पर चलना सीखो, या इस्लाम का नाम ना लो।

मौजूदा ज़माने में मुसलमानों को अपना ईमान और अक्रीदा बचाना बहुत मुश्किल हो गया है। ईमान के चोर अपनी चालबाज़ों और फरेबकारों के ज़रिये भोले भाले मुसलमानों की आखिरत बर्बाद करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ रहे हैं।

ऐसे में ज़रूरी है कि हमें उलमा ए हक की तरफ रुजू करना चाहिए ताकि हम गुमराह फिरकों की फरेबकारियों से आगाह हो सकें और अपने ईमान और अक्रीदे की हिफाज़त कर सकें।

अभी कुछ दिनों पहले मकल बनाम "इस्लाहे समाज की बुनियादी बातें" नज़र से गुज़रा। जिसको "आलमीन एजुकेशनल एंड वेलफेयर सोसाइटी बरेली" की जानिब से शायी किया था। पढ़ कर बहुत हैरत हुई कि आज के नाम निहाद मुसलमानों को क्या हो गया है जो काफिरों के क़दमों में गिरे जा रहे हैं। जिन लोगों के साथ इस्लाम मुहब्बत करने की हराम क़रार देता है उन्हीं को अपना भाई बता कर मुसलमानों को उनसे मुहब्बत करने का हाथ बढ़ाया जा रहा है और शरीअते इस्लामिया को मज़रूह किया जा रहा है।

काफ़िर की मौत से भी डरता हो जिसका दिल,  
कौन कहता है उसे कि मोमिन को मौत मर।

उस मकाले में सूरह निसा की पहली आयत का हवाला देते हुए ज़ाहिर किया गया कि "सारे इंसान आपस में भाई-भाई हैं, चाहे वो किसी भी धर्म के हों लिहाज़ा हमें किसी से नफरत नहीं करना चाहिए।"

क़ुरआन पाक के आप तमाम तराज़िम व तफ़सीर पढ़ लें लेकिन आपको इस आयत का ये मतलब नहीं मिलेगा लेकिन अफसोस सद अफसोस काफ़िरों और मुशरिकों को अपना भाई बनाने के लिए ये लोग इस हद तक गुज़र गये कि मआज़'अल्लाह इन्होंने क़ुरआन पर झूट बांधा और क़ुरआन पर झूट का मतलब इन्होंने अल्लाह पर झूट बांधा।

इरशादे रब्बानी है:

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ  
(سورة اعراف، 37)

"इस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जिसने अल्लाह पर झूट बांधा या उसकी आयतें झुटलाये।"

(सूरह अ'अराफ़, 37)

AM ABDE MUSTAFA

क़ुरआन मजीद से कुछ आयात पेश कर रहे हैं जिन्हें पढ़ कर आप का ज़हन बिल्कुल साफ हो जाएगा कि अल्लाह ने हमें क्या करने का हुक्म दिया है और हम क्या कर रहे हैं और नाम निहाद मुसलमानों का शक्र भी दूर हो जायेगा।

इंशा अल्लाह

(1) मुसलमान मुसलमान भाई-भाई है। (सूरह हज़रात:10)

(2) मुसलमान काफ़िरों को अपने दोस्त न बना लें, मुसलमान के सिवा जो ऐसा करेगा उसे अल्लाह से कुछ इलाक़ा न रहा।

(सूरह आले इमरान:28)

(3) ऐ ईमान वालों! अपने बाप और अपने भाइयों को दोस्त न समझो अगर वो ईमान पर कुफ्र पसंद करें और तुम में से जो कोई उनसे दोस्ती करे।

(सूरह तोबा:23)

(4) ऐ ईमान वालों! जिन्होंने तुम्हारे दीन को हँसी खेल बना लिया है वो जो तुमसे पहले किताब दे गये (यहूदो नसारा) और काफ़िर उनमे से किसी को अपना दोस्त न बनाओ। अल्लाह से डरते रहो अगर ईमान रखते हो

(सूरह माइदा:57)

(5) ज़रूर तुम मसलमानों का सब से बड़ कर दुश्मन यहूदियों और मुशरिकों को पाओगे।

(सूरह माइदा:82)

मज़कूरह आयात से हमें पता चल गया कि काफ़िरों और मुशरिकों से दोस्ती करना कैसा है अल्लाह ने यह तक फरमाया कि जो कोई उनसे दोस्ती करेगा तो अल्लाह से उसका कुछ इलाका नही यानी वो सीधा जहन्नम रसीद हो जाएगा। और तुम्हारे बाप और भाई भी ईमान और कुफ्र को सिर्फ पसंद करे तो उनसे भी दोस्ती न निभाओ। उन्हें भी दूध में से मक्खी की तरह निकल कर फेंक दो। और फरमाया काफ़िरों ने तुम्हारे दीन का हंसी खेल बना लिया है तो तुम कैसे उन्हें भाई या दोस्त बना सकते हो और अगर तुम ईमान वाले होगे, अल्लाह से डरते होगे तो हरगिज़ उन्हें दोस्त नही बनाओगे।

अल्लाह त'आला ने मुसलमानों का सबसे बड़ा दुश्मन यहूदियो और मुशरिकों को बताया। हम जिस मुल्क में रहे रहे है इसमें तादाद के हिसाब से मुशरिक ज्यादा हैं इसलिए हमारे सब से बड़ कर दुश्मन मुशरिक हैं। अफसोस आज नाम निहाद मुसलमान अल्लाह के फरमान को भूल कर मुशरिकों के तलवे चाटते नज़र आ रहे है। और साथ दोस्ती निभाते नज़र आ रहे हैं। क्या इसीलिये तुम्हें मुसलमान बनाया गया था कि तुम दुनिया में



आ कर काफ़िरो मुशरिकों से मुहब्बत और उल्फत का दर्स दो। आज तुमने अल्लाह और उसके रसूल नबी -ए- करीम ﷺ को नाराज़ किया है। तभी मुसलमान दर दर की ठोकरें खा रहे हैं। आज मुसलमान हर जगह मुसीबतों में नज़र आ रहे हैं सिर्फ़ इसलिए कि तुम अपने दीन को छोड़ कर कुफ़्र में इज़्ज़त तलाश करने लग गए हो। काफ़िरो से मुहब्बत का पाठ पढ़ने वाले अपनी आखिरत का जनाज़ा ना निकालें। और हाँ अगर उन्हें कुफ़्र पसंद है तो इस्लाम का नाम ना लें और न ऐसे मकाले छाप कर मुसलमानों को काफ़िरो से मुहब्बत करने का दर्स दें। इज़्ज़त अल्लाह के हाथ में है और तुम काफ़िरो से इज़्ज़त की भीक मांगते हो।

इरशादे रब्बानी है:

वो जो मुसलमानों को छोड़ कर काफ़िरो को दोस्त बनाते हैं क्या उनके पास इज़्ज़त ढूँढते हैं? तो इज़्ज़त तो सारी अल्लाह के लिये है।

ना ले काफ़िरो से मदद कोई सुन्नी

सुलह कुली फ़ितने मिटा ताज वाले

हमारा दीन हमें हर किसी से प्यार मुहब्बत करने की इजाज़त नहीं देता क्योंकि जैसा हमारे लिए खाने पीने की हदें बनी हुई हैं कि ये हलाल है ये हराम है ऐसे ही दोस्ती और दुश्मनी की भी हदें हैं कि ये दोस्ती हराम है और ये हलाल।

काफ़िरो से दोस्ती निभाने वालों के लिए सजा:

इरशादे रब्बानी है:

لَا تَرْكَبُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ

और ज़ालिमों की तरफ न झुको कि तुम्हें आग छुयेगी।

(सूरह हूद:113)

मुफ़्ती अहमद यार खान नईमी रहमतुल्लाह अलैह इस आयत की तफ़्सीर में फरमाते हैं :

हरगिज़ माइल न होना उन बदबख्त काफ़िरो की तरफ जो दुनिया जहाँ में खाली रहा। यानी क़ौली और अमली मुहब्बत तो दरकिनार, उन की तारीफ का दिल मे ख्याल तक ना आने पाये, ना उनके किसी अमल से खुश होना ना दीन के मुक़ाबले कभी किसी मुआमले में किसी काफ़िर की इताअत करना, ना काफ़िरो और बदकारो की मजलिसों, सोहबतो में बैठना। इनमे से जो काम भी किया जाये तो माइलन (यानी काफ़िरो की तरफ झुकना) पाया गया। लिहाज़ा ए मुसलमानों! अगर तुम बाज़ न आये तो अल्लाह और उसके रसूल अलैहिस्सलाम की मुहब्बत तुम से मिट जाएगी। उसका अंजाम क्या होगा तुम को जहन्नम की आग भड़कती हुई छुयेगी औए उसका छूना भी बड़ा अज़ाब है। ये तो सिर्फ माइलन ज़ालिम की सजा है तो अंदाज़ा लगाओ कि ज़ालिम की सजा क्या होगी!

मुसलमान कौन?

इरशादे रब्बानी है:

(1) فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا

तो ए महबूब! तुम्हारे रब की क़सम वो मुसलमान न होगा जब तक कि अपने आपस के झगड़े में तुम्हें हाकिम ना बनाये। फिर जो कुछ तुम हुक्म फ़रमा दो अपने दिलों में इस से रुकावट ना बने और उसे मान ले।

(सूरह निसा:65)

यानी मुसलमान वही है जो अपने दीनी और दुनियावी मुआमलों में हुज़ूर अलैहिस्सलाम के हुक्म को माने। जैसे हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फरमाया : ऐसा करे अपनी तरफ से दीन में तावीलें ना करे।

(2) لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولَئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ مِنْهُ

यानी मुसलमान वही है जो अल्लाह और उसके रसूल अलैहिस्सलाम से मुखालिफत करने वाले को अपना दुश्मन जाने। चाहे वो उसके बाप या किसी दोस्त या भाई या रिश्तेदार ही क्यों न हो।

(3) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهَ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ أَذِلَّةٌ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ

ऐ ईमान वालों! तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा (यानी मुर्तद हो जाएगा) तो अनक़रीब अल्लाह ऐसे लोग लायेगा कि वो अल्लाह के प्यारे और अल्लाह उनका प्यारा, मुसलमानों पर नरम और काफ़िरीयों पर सख्त।

(सूरह माइदा :54)

यानी मुसलमानों की पहचान ये है कि वो अपने मुसलमान भाई के लिए नरम होते हैं, काफ़िरीयों के लिए सख्त होते हैं।

अल्लाह ता'आला हमें काफ़िरीयों, बदमज़हबों, गुमराहों, ज़ालिमों की मुहब्बत से बचाये और मुसलमानों से अच्छे अखलाक से पेश आने की तौफ़ीक़ अता फरमाये। आमीन।

अहक़र मुहम्मद हस्सान रज़ा राइनी

### तफ़रीहुल ख़ातिर में एक झूठी रिवायात

मशहूर किताब "तफ़रीहुल ख़ातिर" में हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आज़म रदीअल्लाहु त'आला अन्हु की निस्बत से ये रिवायात दाखिल है के आप रदीअल्लाहु त'आला अन्हु का एक खादिम फ़ौत हो गया।

उसकी बीवी आपकी खिदमत में हाज़िर हुई और आह वज़ारी करने लगी। उसने आपसे अपने शौहर को ज़िंदा करने की इल्तेजा की।

आपने इल्मे बातिन से देखा के मलकुल मौत उस दिन क़ब्ज़ की गयी तमाम रूहों को ले कर आसमान पर जा रहे हैं। आपने उसे रोका और कहा के मेरे खादिम की रूह वापस कर

दो तो मलकुल मौत ने ये कह कर मना कर दिया के मैंने तो रुहे अल्लाह त'आला के हुक्म से क़ब्ज़ की है।

जब मलकुल मौत ने रुह वापस नहीं की तो आपने रुहो की टोकरी (जिस में उस दिन क़ब्ज़ की गयी तमाम रुहे थी, वो) छीन ली! इससे हुआ ये के जितनी रुहे थी वो सब अपने अपने जिस्मो में वापस चली गयी।

मलकुल मौत ने अल्लाह त'आला के हुज़ूर अर्ज़ की : मौला तू जानता है जो तकरार आज मेरे और अब्दुल क़ादिर के दरमियान हुई, उसने तमाम अरवाह छीन ली।

इस पर अल्लाह त'आला ने इरशाद फ़रमाया के ए मलकुल मौत बेशक अब्दुल क़ादिर मेरा महबूब है, तूने उस के खादिम की रुह को वापस क्यों नहीं किया? अगर एक रुह वापस कर देते तो इतनी रुहे अपने हाथों से दे कर परेशान ना होते।

(ملخصاً: تفریح الخاطر فی مناقب الشیخ عبدالقادر، المنقبة الثامنة، ص 68، ط قادری رضوی کتب خانہ لاہور)

इसी रिवायात के बारे में इमाम -ए- अहले सुन्नत, आलाहज़रत रहिमहुल्लाह से सवाल किया गया, बस फ़र्क़ इतना है के यहाँ खादिम की बीवी का ज़िक्र है और सवाल में खादिम के बेटे का, सवाल में ये इज़ाफ़ा भी है के जब मलकुल मौत ने रुह वापस करने से इन्कार किया तो हुज़ूर गौसे पाक ने उन्हें एक थप्पड़ मारा जिस से मलकुल मौत की आँख बाहर निकल गयी!

आलाहज़रत रदिएल्लाहु त'आला अन्हु ने जवाबन इरशाद फ़रमाया के ये रिवायात इब्लीस की घड़ी हुई है और इस का पढ़ना और सुनना दोनों हराम!

अहमक़, जाहिल, बे अदब ये समझता है के (इस रिवायात को बयान कर के) हज़रते गौसे आज़म की ताज़ीम करता है हालाँकि वो हुज़ूर की सख्त तौहीन कर रहा है।

(انظر: فتاویٰ رضویہ، ج 29، ص 630، ط رضا فاؤन्डیشن لاہور، س 1426ھ)

अब्दे मुस्तफ़ा

### बारह साल पहले डूबी हुई बारात

चन्द किताबो में हुज़ूर सय्यिदुना गौसे आज़म रदिएल्लाहु त'आला अन्हु की एक करामात का ज़िक्र मिलता है के आपने 12 साल पहले डूबी हुई बारात को वापस निकाल दिया।

ये रिवायात अवाम -ओ- खवास में बहुत मशहूर है लिहाज़ा मुकम्मल वाकिया लिखने की ज़रूरत नहीं।

इस रिवायात पर गुप्तगू करते हुए खलीफा -ए- आलाहज़रत, हज़रत अल्लामा सय्यद दीदार अली शाह अलैहिर्रहमा फरमाते है के हुज़ूर गौसे आज़म की करामात दर्जा -ए- तवातुर को पहुची हुई है जैसा के इमाम याफई ने लिखा है के "आपकी करामात मुतवातिर या तवातुर के करीब है और उलमा के इत्तेफ़ाक़ से ये अम्र मालूम है के आपकी मानिन्द करामात का जुहुर आपके बगैर आफाक के मशाइख में से किसी से ना हुआ" मगर ये बारात वाली रिवायात किसी मोतबर ने नहीं लिखी लेकिन इससे ये लाज़िम नहीं आता के हज़रते गौसे पाक इस दर्जे के ना थे

अक्सर मिलाद ख्वां (मुकर्ररीन) वाकिफ ना होने की वजह से मुहमल रिवायात औलिया व अम्बिया की तरफ मंसूब कर देते है और समझते है के अगर ये यहाँ ग़लत है तो भी उनकी तारीफ हमने पूरी कर दी, ये सवाब की तवक्क़ो भी करते है, खैर खुदा इन पर रहम करे।

हज़ारो करामात औलियाउल्लाह और असहाब -ए- रसूल अलैहिस्सलाम से ज़ाहिर ना हुई तो क्या झूठी रिवायात कह देने से उनका रुतबा बढ़ जायेगा? हरगिज़ नहीं असहाब -ए- रसूल तमाम गौसो क़ुतुब -ओ- औलिया से अफ़ज़ल है और तहक्कीक़ से साबित है के औलियाउल्लाह की करामात अक्सर असहाब से ज़्यादा है, बहरहाल ये रिवायात किसी मोतबर ने नहीं लिखी और इमकान -ए- अक्ली से कोई अम्र यक्कीनी नहीं हो सकती

(ملخصاً: فتاویٰ دیداریہ، ص 45)

इमाम -ए- अहले सुन्नत, आलाहज़रत रहिमहुल्लाह से जब इस रिवायात के मुताल्लिक़ सवाल किया गया तो आपने फ़रमाया के अगरचे ये रिवायात नज़र से किसी किताब में न गुज़री लेकिन जुबान पर मशहूर है और इस में कोई अम्र खिलाफ -ए- शरह नहीं लिहाज़ा इस का इन्कार ना किया जाये।

(انظر: فتاویٰ رضویہ، ج 29، ص 630، طرضافاؤنڈیشن لاہور، س 1426ھ)



मालूम हुआ के इस रिवायात का कोई मोतबर व मुस्तनद माखज़ मौजूद नहीं है और एक पहलु ये है के बक्रौल इमाम -ए- अहले सुन्नत इस रिवायात का इन्कार भी न किया जाये लेकिन फिर भी हम कहते है के ज़्यादा मुनासिब यही है के ऐसी रिवायात को बयान करने से परहेज़ किया जाये। हज़रते गौसे आज़म रदिल्लाहु त'आला अन्हु के फ़ज़ाईल बयान करने के लिए दीगर सहीह रिवायात को शामिल -ए- बयान किया जाये।

अब्दे मुस्तफ़ा

### मेरा मुरीद जन्नत में

हज़रते सय्यिदुना गौसे आज़म रदिल्लाहु त'आला अन्हु ने अपने मुरीदीन के लिए जो बशारते इरशाद फरमाई है के मेरा मुरीद बगैर तौबा के ना मरेगा और मैं उस के लिए जन्नत का ज़ामिन हूँ वगैरा, इनको बयान करते हुए ऐतेदाल की मल्हूज़ रखना रखना बहुत ज़रूरी है।

हमारे कहने का मतलब ये है के अवामुन्नास के सामने ये या इस तरह की बातों को इस अंदाज़ ने पेश ना किया जाये जिससे वो मैदान -ए- अमल में हथियार दाल दे और इसी उम्मीद पर नेक कामो को तर्क कर दे के हमारे लिए तो जन्नत की बशारत रखी हुई है। इस का ये मतलब नहीं के इन बशारतो को छुपाया जाये और सिर्फ़ खौफ़ पैदा करने के लिए ऐसा तर्ज अपनाया जाए के एक आम आदमी ये समझ बैठे के अब तो हमारा कुछ हो ही नहीं सकता और जहन्नम हमारे लिए तैयार है।

मुख्तसर ये के खौफ़ और उम्मीद के दरमियान रहा जाये।

इमाम फ़क़ीह अबुलैस नस्र समरकंदी हनफ़ी अलैहिर्हिहमा इसी अम्र की बाबत लिखते है के वाइज़ (मुकर्रिर) खौफ़ व उम्मीद दोनों को अपना मौज़ू -ए- सुखन बनाये सिर्फ़ खौफ़ या सिर्फ़ उम्मीद के मौज़ू पर बयान न करे क्योंकि ऐसा करना ममनू है।

(انظر: بستان العارفين للسمرقندی، ص 58)

अब्दे मुस्तफ़ा

## तू मेरा गुलाम, तेरा बाप मेरे नाना का गुलाम

हसनैन करीमैन की शानो अज़मत बयान करनी हो या फारूक़ -ए- आज़म का इश्के रसूल, दोनों के लिये एक रिवायत कसरत से बयान की जाती है जो कुछ यूँ है :-

एक मर्तबा हसनैन करीमैन और फारूक़ -ए- आज़म के बेटे बचपन में साथ मिलकर खेल रहे थे कि अचानक किसी बात को लेकर लड़ायी हो जाती है! बातों ही बातों में इमाम हुसैन रदिअल्लाहू त्आला अन्हु ने फारूक़ -ए- आज़म के शहज़ादे से फरमाया कि "तू मेरा गुलाम तेरा बाप मेरे नाना का गुलाम"

ये सुनकर हज़रते उमर फारूक़ रदिअल्लाहू त्आला अन्हु के साहबज़ादे को बुरा लगा और वो इस बात की शिकायत करने के लिये अपने वालिद के पास चले गये।

वालिद साहब से कहा की हसनैन मुझे ऐसा ऐसा कहते है।

हज़रते उमर फारूक़ रदिअल्लाहू त्आला अन्हु ने अपने बेटे से फरमाया कि जाओ और उनसे ये बात लिखवाकर ले आओ, चुनान्चे इब्ने उमर ने हसनैन करीमैन से कहा कि आपने जो कहा है उसे कागज़ पर लिख दीजिये

इमाम हुसैन रदिअल्लाहू त्आला अन्हु ने वही बात लिख भी दी।

जब हज़रते उमर फारूक़ रदिअल्लाहू त्आला अन्हु के हाथ में वो कागज़ दिया गया तो आप उसे चूमने लगे और बहुत खुश हुए, फिर आपने बेटे से फरमाया कि बेटा अब मुझे मैदान -ए- हश्र का कोई खौफ नहीं क्योंकि मुझे आले रसूल ने रसूलुल्लाह का गुलाम लिख दिया है, इस चिट्ठी को मेरे कफन मे रख देना ताकि मुनकर नकीर मुझसे सवालात ना करें, फिर आपने अपने बेटे को नसीहत करते हुए हसनैन करीमैन के फज़ाइल बताये और उनकी गुलामी करने का हुक्म दिया।

ये वाक्रिया मुख्तलिफ अल्फाज़ में बयान किया जाता है।

ये वाक्रिया इतना मशहूर है कि अक्सर मुक़र्रीन इसे बयान करते हैं।

हमने किताबों में इसे तलाश किया लेकिन हमें नहीं मिला, इसके बर अक्स जो मिला वो पेशे खिदमत है :-

हज़रत अल्लामा मुफ्ती शाह मुहम्मद अजमल क़ादरी रहीमहुल्लाह से इसी वाक़िये के मुतल्लिक सवाल किया गया कि ये वाक़िया सहीह है ये ग़लत? साइल ने ये भी लिखा है कि इस वाक़िये पर सूफी अज़ीज़ अहमद साहब बरेलवी और चन्द उल्मा ने एतराज़ किया है

आपने जवाब में तहरीर फरमाया:-

ये वाक़िया किसी अरबी की मुअतबर व मुस्तनद किताब में मेरी नज़र से नहीं गुज़रा तो यक़ीन के साथ ना इसको सहीह कहा जा सकता है ना ग़लत।

(فتاویٰ اجملیہ، ج 4، ص 629، ط شیر برادرز لاہور، س 2005ء)

अब्दे मुस्तफ़ा कहता है कि जो हज़रात इस रिवायत को बयान करते हैं उन पर लाज़िम है कि हवाला भी बयान करें और किसी भी रिवायत को बयान करने से पहले इस बात को मद्दे नज़र रखें कि सिर्फ़ मशहूर होने की वजह से किसी रिवायत को बयान करना दुरुस्त नहीं।

अब्दे मुस्तफ़ा

**जा तुझे सात बेटे होंगे**

हज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आज़म रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की करामत बता कर ये रिवायात बयान की जाती है के एक औरत आप की खिदमत में हाज़िर हुई और कहा के या हज़रत मुझे बेटा दो!

आपने फ़रमाया के लौहे मेहफ़ूज़ में तेरी किस्मत में बेटा नहीं है।

औरत ने कहा : अगर लौहे मेहफ़ूज़ में होता तो आप के पास क्यों आती?

आप ने अल्लाह त'आला से अर्ज़ किया के या खुदा तू इस औरत को बेटा दे दे जवाब आया लौहे महफ़ूज़ में नहीं।

अर्ज़ किया के दो बेटे दे, हुक्म हुआ के जब एक नहीं तो दो कहाँ से दू? अर्ज़ किया के तीन बेटे दे, इरशाद हुआ के एक भी नहीं तो तीन कहाँ से दू? इसकी तकदीर में बिलकुल नहीं।

जब वो औरत ना उम्मीद हो गयी तो गौसे आजम ने गुस्से में आ कर अपने दरवाजे की खाक से तावीज़ बना कर दे दी और कहा के जा! तुझे सात बेटे होंगे।  
वो औरत खुश हो कर चली गयी और उस के सात लड़के हुए।

इस रिवायत के मुतल्लिक हज़रत अल्लामा मुफ़्ती शाह मुहम्मद अजमल क़ादरी रहिमहुल्लाह लिखते है के ये वाकिया किसी मोतबर व मुस्तनद किताब में नज़र से न गुज़रा और ब जाहिर बे अस्ल और लगव (वाहियात) मालूम होता है, इनसे इहतेराज़ करना चाहिए और "बहजतुल असरार" से हज़रत की करामात बयान करनी चाहिए

(ملخصاً: فتاوى اجمالية، كتاب الخطر والاباحة، ج 4، ص 9، ط شبر برادرز لاہور، س 2005ء)

अब्दे मुस्तफ़ा

### गौसे आजम और हक़ गोयी

अल्लामा इब्ने कसीर अपनी तारीख में लिखते हैं कि हज़रते सय्यिदुना शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी रदिअल्लाहु त्आला अन्हु खुलफ़ा, वुज़रा, सलातीन और अवाम व ख्वास सबको नेकी का हुक्म देते और बुराइयों से मना फरमाते और बड़ी साफ़ गोयी और ज़ुरत के साथ इनको भरे मजमे में और बर सरे मिम्बर अलल ऐलान टोक देते थे और अल्लाह त्आला के मामले में किसी मलामत करने की आपको परवा ना होती थी, इन्तिहायी बे बाक और हक़ गो थे।

(انظر: قلائد الجواهر، ص 8، طبع بمطبعة عبد الحميد احمد حنفی بمصر)

अब्दे मुस्तफ़ा

### हुज़ूर गौसे पाक का ख्वाब

ईमाम -ए- अहले सुन्नत, आला हज़रत रदिअल्लाहु त्आला अन्हु से सवाल किया गया कि क्या ये रिवायत सहीह है कि हुज़ूर गौसे पाक रदिअल्लाहु त्आला अन्हु ने ख्वाब देखा कि इमाम अहमद बिन हम्बल रदिअल्लाहु त्आला अन्हु फरमाते हैं कि मेरा मज़हब ज़यीफ़ हुआ जाता है लिहाज़ा (ए अब्दुल क़ादिर) तुम मेरे मज़हब मे आ जाओ, मेरे

मज़हब मे आने से मेरे मज़हब को तक्रवियत हो जायेगी, इसलिये गैसे पाक हनफी से हम्बली हो गये?

आला हज़रत रदिएल्लाहु त'आला अन्हु ने जवाब में फरमाया कि ये रिवायत सहीह नहीं, हुज़ूर गैसे पाक हमेशा से हम्बली थे और बाद को जब मन्सबे इजतिहादे मुतलक हासिल हुआ तो मज़हबे हम्बल को कमज़ोर होता हुआ देखा तो इसके मुताबिक़ फ़तवा दिया कि हुज़ूर मुहियुद्दीन और दीन -ए- मतीन के ये चारों सुतून हैं, लोगों की तरफ से जिस सुतून मे ज़'अफ आता देखा उसकी तक्रवियत फरमायी।

(फ़ावौ रज़ुविये, ज 26, ص 433, رضافاؤنڈیشن لاہور، س 1425ھ)

अब्दे मुस्तफ़ा

### कुत्ते की तखलीक पर एक बे असल रिवायत

एक रिवायत बयान की जाती है के हज़रते आदम अलैहिस्सलाम के पुतले पर इब्लीस ने थूक दिया तो अल्लाह त'आला ने वहाँ से मिट्टी निकाल कर कुत्ता बना दिया (मुलक्खसन)

मैं (अब्दे मुस्तफ़ा) ने बाज़ लोगो को ये भी कहते हुए सुना के "चूँकि हज़रते आदम अलैहिस्सलाम की मिट्टी से कुत्ते को पैदा किया गया इसी लिए ये जानवर वफादार होता है और नापाक इस लिए के इब्लीस का थूक शामिल है" इस रिवायात में इतने बारीक़ नुकतो को देख पाना हमारे बस की बात नहीं अलबत्ता जो हमारी आँखों ने देखा उसे बयान करते है

इस रिवायात के मुताल्लिक़ हज़रत अल्लामा मुफ़्ती वकारुद्दीन क़ादरी रज़वी रहमतुल्लाही त'आला अलैह फरमाते है के ये रिवायात बे बुनियाद और लगव (बकवास) है, सहीह रिवायात में इसका कोई तज़क़िरा नहीं मिलता।

(وقار الفتاوى، ج 1، ص 344)

अब्दे मुस्तफ़ा



## इमाम शैबी और झुटा मुकर्रिर

इमाम शैबी जो के अजिल्ला ताबईन में से हैं, फरमाते हैं के मैं एक मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए गया तो देखा एक लंबी दाढ़ी वाला शख्स तक्ररीर कर रहा था, उन्हें लोग घेरे हुए है, उसने बयान किया के नबीय्ये अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया के अल्लाह त'आला ने दो सूर पैदा फरमाये है, हर सूर में दो बार फूँका जाएंगा एक बेहोशी के लिए एक क़यामत के लिए

इमाम शैबी ने उस मुकर्रिर से कहा के अल्लाह से डर! झूटी हदीस मत बयान कर, अल्लाह त'आला ने सिर्फ एक सूर पैदा किया है जिस में दो बार फूँका जाएंगा तो उस मुकर्रिर ने कहा के ए बदकिरदार! तू मेरा रद्द करता है और जूता उठा कर इमाम शैबी को मारने लगा फिर पूरा मजमा इमाम शैबी पर टूट पड़ा और पिटाई शुरू कर दी और इमाम शैबी कहते है के मुझे उस वक़्त तक नहीं छोड़ा जब तक मैं ने ये नहीं कहा के अल्लाह त'आला ने दो सूर पैदा किये है, तो उन लोगो ने मेरी जान बख़्शी

(ملخصاً، فتاوى شارح بخارى، ج 2، ص 130)

आज के मुकर्रिरीन और अवाम का भी यही हाल है, अगर कोई शख्स कह दे के फुलां मुकर्रिर ने झुटा वाकिया बयान किया है तो उसकी खैर नहीं

अब्दे मुस्तफ़ा

AM ABDE MUSTAFA

## बीवी हो तो ऐसी

एक ताबई बुजुर्ग, हज़रते सईद बिन मुसय्यब रहमतुल्लाही त'आला अलैह ने अपनी साहबजादी का निकाह अपने एक तालिब -ए- इल्म से किया, दूसरे दिन सुबह के वक़्त जब उन के शौहर घर से निकलने लगे तो शहज़ादी साहिबा ने पूछा के मेरे सरताज! कहाँ तशरीफ़ ले जा रहे है?

उन्होंने कहा के इल्मे दीन सीखने के लिए (आपके वालिद) सईद बिन मुसय्यब की मजलिस में जा रहा हु शहज़ादी साहिबा ने कहा के आप बैठ जाए! (मेरे वालिद के पास मत जाये) इल्मे सईद मैं आप को सिखाती हूँ!

(انظر: المدخل لابن الحاج مكي، ج 1، ص 156 به حواله ماہنامہ فیضان مدینہ)

अल्लाह त'आला हमे भी ऐसी इल्म वाली बीवी अता फरमाये जो खिदमत -ए- दीन में हमारी मदद करे  
आमीन।

अब्दे मुस्तफ़ा

### झुटे मुकर्रिर ने हद कर दी

कभी कभी हमें मुकर्रिरीन से ऐसी रिवायात सुनने को मिलती है के हम हैरान व परेशान हो जाते हैं। ऐसे ऐसे किस्से के ना तो कभी आँखों ने देखे ना कानों ने सुने। ऐसी रिवायात सुन कर अवाम भी खुश होती है के चलो आज कुछ नया सुनने को मिला है। दौर -ए- हाज़िर में कुछ मुकर्रिरीन का यही रवैय्या है के बस कुछ नया होना चाहिए। ऐसे मुकर्रिरीन को बस अपने बाज़ार और अपनी शोहरत की फ़िक्र होती है। हमारे ज़माने के मुकर्रिरीन तो क़ाबिल -ए- तारीफ़ है ही लेकिन गुज़िश्ता ज़माने में भी ऐसे मुकर्रिरीन गुज़रे है जिनके कारनामे क़ाबिल -ए- ज़िक्र हैं।

एक मरतबा इमाम अहमद बिन हम्बल और इमाम यहया बिन मुईन ने एक मस्जिद में नमाज़ अदा की, इसी दौरान एक किस्सा गो मुकर्रिर खड़ा हुआ और उसने बयान शुरू किया के

"मुझे अहमद बिन हम्बल और यहया बिन मुईन ने रिवायत की और उन्होंने अब्दुर्रज़ज़ाक़ से रिवायत की, उनसे मामर ने, उनसे कतादा ने, उनसे अनस बिन मालिक ने के रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया के जिस शख्स ने एक मरतबा कलिमा -ए- तैय्यबा पढ़ा तो अल्लाह त'आला उसके हर लफ़्ज़ से एक परिंदा पैदा फरमाता है जिसकी चोंच सोने की होती है और उसके पर मरजान के होते है..... "और फिर इस हदीस की इतना तूल दिया के तकरीबन बीस सफ़हात में आये।

मुकर्रिर साहब की बयान करदा रिवायत सुन कर इमाम अहमद बिन हम्बल इमाम यहया बिन मुईन को देखने लगे और वो इमाम अहमद बिन हम्बल को।

इमाम अहमद बिन हम्बल ने इमाम इब्ने मुईन से पूछा के क्या आपने इसे ये हदीस बयान की? तो इमाम इब्ने मुईन ने कहा के खुदा की कसम! मैंने ये हदीस आज पहली बार सुनी है।

जब वो क्रिस्सा गो अपनी तकरीर से फ़ारिग हुआ तो इन दोनों ने उसको बुलाया और इमाम इब्ने मुईन ने पूछा के ये हदीस तुमसे किस ने बयान की? उसने जवाब दिया के मुझसे अहमद बिन हम्बल ने और यहया बिन मुईन ने बयान किया है, इस पर इमाम इब्ने मुईन ने फ़रमाया के मैं ही इब्ने मुईन हूँ और ये अहमद बिन हम्बल है और हम दोनों ने आज पहली बार ये हदीस तुम्हारे मुँह से सुनी है।

ये सुन कर उसने फ़ौरन कहा के अरे तुम इब्ने मुईन हो? उन्होंने कहा के हाँ मैं ही हूँ तो उसने कहा के मैंने तो सुना था के इब्ने मुईन अहमक़ है, आज इस बात की तस्दीक भी हो गयी!

इमाम इब्ने मुईन ने पूछा के तुमने कैसे जाना के मैं अहमक़ हूँ? उसने कहा के तुम समझते हो के दुनिया में तुम दोनों के इलावा कोई अहमद बिन हम्बल और इब्ने मुईन नहीं है, इन अहमद बिन हम्बल के इलावा मैंने सतरा (17) अहमद बिन हम्बलो से ये रिवायत सुनी है।

(الجامع الاحكام القرآن، ج 1، ص 69 به حواله نقد و نظر، ص 13)

अब्दे मुस्तफ़ा

## पुराने ज़माने के झूटे मुकर्रिरीन

आज हमारे बीच कसीर तादाद में ऐसे मुकर्रिरीन मौजूद है जो झूटी रिवायात और मनघड़त क्रिस्से बयान करने में माहिर हैं। ऐसे मुकर्रिरीन की तारीख बहुत पुरानी है चुनान्चे इमाम इब्ने कुतैबा (मुतवप्फा 276 हिजरी) अपने ज़माने के मुकर्रिरीन के बारे में क्या लिखते है उसे पढ़े, ऐसा लगता है कि दौरे हाज़िर उन की नज़रों में है।

आप लिखते है के ये वाईज़ीन जब जन्नत का ज़िक्र करते है तो कहते है इस (जन्नत) में मुश्क या ज़ाफ़रान की हूरें होगी, इनके बदन की बनावट ऐसी होगी, अल्लाह त'आला ने अपने वलियों के लिए मोतियों का सफ़ेद महेल बनाया है जिस में सत्तर हज़ार ये होगा

सत्तर हज़ार वो होगा और फिर वो मुकर्रिर सत्तर सत्तर हज़ार की इतनी चीज़े बयान करेगा के गोया जन्नत में किसी चीज़ की तादाद सत्तर हज़ार से कम होना जाएज़ ही नहीं।

(आप मज़ीद लिखते है) जितना ये (हैरत अंगेज़ रिवायतें) ज़्यादा होंगी उतना ही ताज्जुब और पसंदीदगी में इज़ाफ़ा होगा और उतने ही देर तक लोग इनके पास बैठेंगे और फिर इतनी ही तेज़ी से बरख़्शीश और इनामात पेश किये जायेंगे।

(ताविल مختلف الحديث لابن قطيبه الدينوري، ص 28 به حواله الد خيل في التفسير: احمد شحات موسى، ص 59)  
(ماخوذ از نقد و نظر)

हज़ारो साल पहले भी ऐसे मुकर्रिरीन मौजूद थे जो लोगो को हैरान करने के लिए और उनसे नज़राने वसूल करने के लिए किस्से कहानियां सुनाया करते थे, आज भी ऐसे मुकर्रिरीन की भरमार है जिनको अवाम में मक़बूलियत भी हासिल है। इनकी बयान करदा रिवायत मानो पत्थर की लक़ीर है यानि जो इन्होंने बयान कर दिया वो ग़लत हो ही नहीं सकता।

इनके मुकाबले में लोग बड़े से बड़े आलिम की बात मानने को भी तैयार नहीं होते। अब तो बस इतना ही कहा जा सकता है के अल्लाह बचाएं ऐसे मुकर्रिरीन से।

अब्दे मुस्तफ़ा

AM ABDE MUSTAFA

### लिखने वाले ज़रूर पढ़ें

इमाम कस्तलानी अलैहिर्रहमा ने एक किताब लिखी जिस में उन्होंने इमाम सुयूती अलैहिर्रहमा की किताबो से मदद ली लेकिन कहीं इमाम सुयूती का ज़िक्र नहीं किया। इमाम सुयूती कहा करते थे के उन्होंने मेरी किताबो से मदद ली और ये ज़ाहिर नहीं किया के वो मेरी किताबो से नक़ल कर रहे है, ये एक किस्म की खयानत है जो नक़ल में मायूब है और कुछ हक़ पोशी भी है।

इमाम सुयूती की इस शिकायत का इतना चर्चा हुआ के ये शिकायत शैखुल इस्लाम, जैनुद्दीन ज़करिया अन्सारी के हुज़ूर मुहाकमा की शक्ल में पेश हुई।

इमाम सुयूती ने इमाम कस्तलानी को कई जगहों पर क़सूरवार ठेहराते हुए फ़रमाया के इन्होंने अपनी किताब में कई मवाके पर बैहकी के हवाले दिए है, ज़रा ये बताये के बैहकी की तसनिफ़ात किस क़द्र इनके पस मौजूद है और किन तसनिफ़ात से इन्होंने नक़ल की है।

जब इमाम कस्तलानी निशानदेही करने से आजिज़ रहे तो इमाम सुयूती ने कहा के आपने मेरी किताबो से नक़ल किया है और मैंने बैहकी से पस आपको लिखते वक़्त ये ज़ाहिर करना चाहिए था के आपने मुझ से नक़ल किया और मैंने बैहकी से ताकि मुझसे इस्तेफ़ादे का हक़ भी अदा होता और तस्हीह -ए- नक़ल की ज़िम्मेदारी से भी बरी हो जाते।

इमाम कस्तलानी मुल्ज़िम की हैसियत से मजलिस से उठे और हमेशा दिल में ये बात रखी के इमाम सुयूती के दिल से इस कुदूरत को धोया जाये।

एक रोज़ इसी इरादे से इमाम कस्तलानी नंगे सर व पैर इमाम सुयूती से मिलने शहरे मिस्र से बाहर निकले और इमाम सुयूती के दरवाज़े पर दस्तक दी, इमाम सुयूती ने दरयाफ़्त किया के कौन? इमाम कस्तलानी ने कहा के मैं अहमद हूँ, बरहना सर -ओ- पा आपके दरवाज़े पर खड़ा हूँ के आपके दिल से कुदूरत को दूर कर के आपको राज़ी करूँ। ये सुन कर इमाम सुयूती ने अंदर से कहा के मैंने दिल से कुदूरत निकाल दी, लेकिन न दरवाज़ा खोला और ना मुलाकात की!

(ملخصاً: بستان المحدثين مترجم، ص 204، ط مير محمد کتب خانہ کراچی)

इस वाकिये से वो लोग सबक हासिल करे जो दूसरों की तहरीर को अपनी तरफ मंसूब करते है।

अगर हम किसी की तहरीर को नक़ल करते है तो चाहिए के उसे जू का तूर रहने दे। ये अम्र भी लाज़मी है के जिससे इस्तेफ़ादा किया गया है उसका ज़िक्र किया जाये।

अब्दे मुस्तफ़ा



## जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है

एक मुअज्जिन जिसने 40 साल तक मिनारे पर चढ़ कर अज़ान दि, एक दिन अज़ान देने के लिए मिनारे पर चढ़ा और अज़ान देते हुए जब "हयया अलल फलाह" पर पहुँचा तो उसकी नज़र एक नसरानी औरत पर पड़ी, उसकी अक्ल और दिल जवाब दे गये।

अज़ान छोड़ कर उस औरत के पास जा पहुँचा और उसे निकाह का पैगाम दिया, वो औरत कहने लगी के मेरा मेहर तुझ पर भारी होगा

उस शख्स ने कहा के तेरा मेहर क्या है? औरत बोली के दीन -ए- इस्लाम छोड़ कर मेरे मज़हब में दाखिल हो जा!

उस मुअज्जिन ने इस्लाम को छोड़ कर उस औरत का मज़हब इख्तियार कर लिया!  
(मआज अल्लाह)

फिर औरत ने कहा के मेरा बाप घर के निचले कमरे में है, तुम उस से जाकर निकाह की बात करो।

जब वो सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा तो उसका पाओं फिसल गया जिसकी वजह से कुफ़्र की हालत में ही मर गया !!!

अपनी शहवत भी पूरी ना कर सका और दिन-ए-इस्लाम से भी हाथ धो बैठा।

(انظر: الروض الفائق ترجمه به نام حکایتیں اور نصیحتیں، ص 42، مکتبۃ المدینہ کراچی)

इस ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं के कब साथ छोड़ दे।

क्या पता आज रात हम सोएं और फिर आंख ही ना खुले।

अल्लाह तआला हमें बुरे खात्मे से बचाये।

(आमीन)

अब्दे मुस्तफ़ा

## जन्नत में हुज़ूर ﷺ की शादी

हज़रते साद बिन जुनादा रदिअल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया कि अल्लाह अज़्ज़वजल जन्नत में मेरी शादी हज़रते मरयम बिनते इमरान (यानी

ہجرت ایسا الہیہسلام کی والیدا) اور ہجرت آسیا اور مہسا الہیہسلام کی بہن سے فرمایہگا۔

(انظر: المعجم الکبیر للطبرانی، مترجم، ج4، ص135، ج5353، طبروگریو بکس لاہور)

اک اور ریاات میں ہ کی رسول -ع- کریم ﷺ نے ہجرت آیشا ردیاللاہو تآالا انہا سے یرشاہ فرمایا کی کما تہم مالوم ہ کی اللاح اذجلجل جنت میں مہا نیکاہ ہجرت مریم بینہ یران اور ہجرت مہسا الہیہسلام کی بہن کولسوم اور فیرین کی (نک وا پارسا) بیوی آسیا سے کرہگا۔

(انظر: المعجم الکبیر للطبرانی، مترجم، ج5، ص724، ج7931، طبروگریو بکس لاہور)

ہجرت اللامامہ موفی مہممہ یمتیا ج کادی ہافیزہللاہ لیکتہ ہ کی تفسیر-ع-ساوی میں ہ کی پاچ خواتین افجل ہ مریم، خدیجا، فاتیما، آیشا اور آسیا ردیاللاہو تآالا انہوم اجمین، بیوی آسیا اور بیوی مریم جنت میں ہجور ﷺ کی اذواج میں سے ہوںگی۔

(انظر: عطاءین اردو شرح تفسیر جلالین، ج1، ص401، طادارۃ فیضان رضا کراچی)

ہجرت اللامامہ موفی مہممہ اکمل مہنی ہفیزہللاہ فتاوا رجاویا کے ہوالہ سے لیکتہ ہ کی ہجرت مریم، ہجرت کولسوم اور ہجرت آسیا کا نیکاہ جنت میں ہجور ﷺ سے ہوںگا۔

(ملخصاً: کیا آپ کو معلوم ہے؟، حصہ 1، ص146 بہ حوالہ فتاوی رضویہ قدیم، ج9، ص11)

ہجرت اللامامہ موفی ابور رہیم ہفیزہللاہ تفسیر -ع- یرہ کسیر، تفسیر -ع- یرہ منسور، تفسیر -ع- خا جین، تفسیر -ع- کرتوبی ویرا کے ہوالہ سے لیکتہ ہ کی جنت میں ہجرت مریم، ہجرت آسیا اور ہجرت کولسوم ( کولسوم/ہکیما/کلیما) ہجور ﷺ کی جوییت سے مشرف و سرفرا ج ہوںگی۔

(ملخصاً: فتاوی بریلی شریف، ص222، طزاویہ پبلشرز لاہور)

موفی مہممہ یونس رجا اوہسی ہفیزہللاہ نے ہ لیکھا ہ کی جنت میں ہجرت مریم کا نیکاہ ہجور ﷺ سے ہوںگا۔

اَبَدے مُسْتَفَا

## آپ इन में से क्या हैं?

हज़रते अबु हुरैरा रदिएल्लाहु त्आला अन्हु बयान करते हैं कि मैंने नबीय्ये करीम ﷺ को ये फरमाते हुए सुना :-

الا ان الدنيا ملعونة ملعونٌ ما فيها الا ذكر الله وما والاه وعالم او متعلم

तर्जुमा : दुनिया मल'ऊन (लानत ज़दा) है और इस में मौजूद हर चीज़ मल'ऊन है, सिर्फ अल्लाह त्आला का ज़िक्र, उसका ज़िक्र करने वाला, आलिम और तालिब-ए-इल्म (मल'ऊन नहीं है)

- ابن ماجه، ج 2، ص 780، ر 4112، ط شبیر برادرزلاهور، س 2013ء

وترندی، ج 4، ص 281، ر 2322، ط دعوت اسلامی پاکستان

अल्लाह अज़्ज़वजल से दुआ है कि वो हमें दुनिया की मुहब्बत से बचाये और अपना ज़िक्र करने और ज़्यादा से ज़्यादा इल्मे दीन हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फरमाए।

اَبَدے مُسْتَفَا

AM ABDE MUSTAFA

## हज़रते फ़ातिमा की तरफ़ मंसूब एक मौजू रिवायत

इमाम -ए- अहले सुन्नत, आला हज़रत रहीमहुल्लाह से सवाल हुआ कि खातून -ए- जन्नत, हज़रत फ़ातिमा रदिएल्लाहु त्आला अन्हा की निसबत से ये बयान करना कि रोज़े महशर वो बरहना सरो पा (यानी नंगे सर और पैर) ज़ाहिर होंगी, इमाम हसन व हुसैन के खून आलूद और ज़हर आलूद कपड़े काँधे पर लिये हुये और नबीय्ये करीम ﷺ के दन्दान मुबारक जो जंगे उहुद में शहीद हुये थे उसे हाथ में लिये हुये बारगाहे इलाही में हाज़िर होंगी और अर्श का पाया पकड़ कर हिलाएंगी और खून के मुआविज़े में गुनहगार उम्मत को बख्शवायेंगी, ये सहीह है या नहीं?

इमामे अहले सुन्नत जवाबन लिखते हैं कि ये सब महज़ झूठ, इफ्तिरा, किज़्ब, गुस्ताखी और बे अदबी है, मजमा -ए- अव्वलीन व आखिरीन में उनका बरहना तशरीफ लाना जिनको बरहना सर कभी आफताब ने नहीं देखा, वो कि जब सिरात पर से गुज़र फ़रमायेंगी तो ज़ेरे अर्श से मुनादी निदा करेगा कि ए अहले महशर! अपने सर को झुका लो और अपनी आंखें बन्द कर लो कि फ़ातिमा बिनते मुहम्मद ﷺ सिरात पर गुज़र फ़रमायेंगी फिर वो नूरे इलाही बुर्क की तरह सत्तर हज़ार हूरें जलवे में लिये हुये गुज़र फ़रमायेगा।

(ملخصاً: احکام شریعت، ص 160)

अब्दे मुस्तफ़ा

### हुज़ूर ﷺ की उंगलियाँ मुबारक

हुज़ूर -ए- अकरम, सय्यिद -ए- आलम ﷺ की शहादत की उंगली मुबारक दर्मियानी उंगली से लम्बी थी और दर्मियानी उंगली अपने साथ वाली उंगली से लम्बी थी और वो अपने साथ साथ वाली उंगली से लम्बी थी यानी शहादत की उंगली मुबारक के बाद तीनों उंगलियाँ एक के बाद एक लम्बाई में छोटी थी। अल्लामा दुमेरी रहीमहुल्लाह ने इस पर गुफ्तगु करते हुए एक हदीस भी नक़ल की है और उस हदीस के बारे में इमाम इब्ने हजर हैतमी शाफ़यी रहीमहुल्लाह लिखते हैं कि, इस हदीस को शैखुल इस्लाम, इब्ने हजर रहीमहुल्लाह ने "असदुल गाबा" में और अल्लामा क़ुर्तुबी रहीमहुल्लाह ने सूरह -ए- बक्ररह की तफ़सीर में ज़िक्र किया है।

(فتاویٰ حدیثہ، ص 754، ط مکتبہ اعلیٰ حضرت)

अब्दे मुस्तफ़ा

### सहाबा को बुरा मत कहिये

इमाम बुखारी अलैहिर्रहमा (मुतवफ़्फ़ा 256 हिजरी) फ़रमाते हैं कि मैं ने एक हज़ार (1000) से ज़्यादा अहले इल्म से मुलाक़ात का शर्फ़ हासिल किया जिन में हिजाज़ -ए-

मुकद्दस, मक्का, मदीना शरीफ, कूफ़ा, बसरा, वासित, बगदाद, शाम, मिस्र और जज़ीरा के बुजुर्ग भी हैं, और इन से सिर्फ एक बार ही नहीं 46 साल से ज़ायिद अर्सा में कई मर्तबा मुलाकात का शर्फ हासिल हुआ मगर मैं ने इनमें से कोई एक बुजुर्ग भी ऐसे नहीं देखे जो सहाबा -ए- किराम की बुराई करते हों।

-ملقطاً: شرح اصول اعتقاد اهل السنة والجماعة، ج 1، 164، رقم 320، ط مکتب دار البصيرة مصر

ومن هو معاوية، ص 16

अब्दे मुस्तफ़ा

### मुआफी की क्या बात है

एक बुजुर्ग को किसी ने खाने पर बुलाया, जब वो घर पहुँचे तो माज़रत कर ली कि खाने को कुछ नहीं है!

तीन बार बुला कर ऐसा ही किया लेकिन इन बुजुर्ग ने उफ़ तक ना किया।

तीसरी मर्तबा वो शख्स क़दमों में गिर पड़ा और माफी मांगते हुये कहने लगा कि मैंने तो आपका इम्तिहान लिया था।

ये सुन कर वो बुजुर्ग कहने लगे कि इसमें माफी मांगने की क्या बात है? ये मामला तो कुत्ते जैसा है, बुलाओ तो चला आता है और धुतकारो तो चला जाता है।

अल्लाहु अकबर! दौरे हाज़िर में ऐसा अख़्लाक़ कहाँ देखने को मिलता है अगर हमें कोई दावत दे कर ऐसा करे तो आयिन्दा से उसकी दावत को क़ुबूल करना तो कुजा हम उसकी शक़ल देखना भी ग़वारा नहीं करेंगे, अभी तो हाल ये है कि खाने में थोड़ी बहुत कमी रह जाये तो हम शिकायतों के पहाड़ खड़े कर देते हैं।

अल्लाह त्आला हमें अख़्लाक़ -ए- हसना अता फरमाए और तकब्बुर वा रियाकारी से महफूज़ रखे।

अब्दे मुस्तफ़ा



# OUR OTHER PAMPHLETS

